मुरली से कविताएं

(1 January 2019 से 16 January 2019) - www.brahma-kumaris.com

रोज की शिव बाबा की ज्ञान मुरली से प्रेरित यह कविताएं आपको श्रीमत का परिचय देती है और श्रीमत को जीवन में धारण करने का सहज उत्तम मार्ग दिखाती है।

- मुरली कविता दिनांक 1.1.2019

तुम सब हो वनवाह में अब शौख न कोई पालो, अच्छी रीति पढ़कर तुम कैरेक्टर शुद्ध बना लो
ज्ञान रत्नों का हर पल सबको दान करते जाओ, इसी विधि से खुद को भी भरपूर बनाते जाओ
ज्ञान धारण कर जो दान करे सयाने वे कहलाते, बुद्धि में यदि छेद हो तो ज्ञान रत्न भी बह जाते
पांच विकारों से तुम रखना अपनी दूरी बनाकर, रूप बसन्त बनना ज्ञान मार्ग पर कदम बढ़ाकर
बाप ही आकर रचता रचना की पहचान बताते, देवताओं का सुन्दर बगीचा गुप्त रूप से बनाते
छोटे से पुरुषोत्तम संगमयुग में बाप पढ़ाने आते, इसी कर्तव्य की याद में हम शिव जयन्ती मनाते
सतयुगी फूलों के संसार में बच्चों को अब जाना, कलियुगी कांटो भरी दुनिया से दिल ना लगाना
बाप को याद करके विकारों की जंक मिटाओ, योगबल के द्वारा अपने अन्दर कशिश बढ़ाओ
बुद्धि रूपी झोली को ज्ञान रत्नों से भरते जाओ, धारणा करके ज्ञान रत्नों का दान करते जाओ
खाने पहनने के सभी शौक जीवन से मिटाओ, खुशबूदार फूल बनकर औरों को बनाते जाओ
शुभचिंतक बनकर हर आत्मा में स्नेह जगाओ, यही विधि अपनाते हुए सबका सहयोग पाओ
श्रेष्ठ संगमयुग में सर्व के लिए दाता बन जाओ, भविष्य राज्य में हर आत्मा को भरपूर बनाओ।

- **मुरली कविता दिनांक 2.1.2019**

संगमयुग में पुरुषार्थ कर पुरुषोत्तम बन जाओ, याद और पढ़ाई पर पूरा अटेंशन रखते जाओ

लाभ और हानि का मन में चिंतन करते जाओ, राजाई के वर्से सौदा तुम बाप से करते जाओ
सुदामा समान दो मुट्ठी चावल तुम बाप को देना, सारे विश्व की बादशाही बदले में बाप से लेना
विकारों के संग से अपनी पूरी सम्भाल करना, सदा के लिए एक सत बाप का संग ही करना
बाप जो पढ़ाते हैं उसका खुद पर नशा चढ़ाना, पढ़ाई के बगैर तुम एक दिन भी नहीं बिताना
सिर्फ बाप की मदद ही सूली को कांटा बनाती, बड़े बाप के कारण बड़ी बात छोटी हो जाती
इसी निश्चय से ट्रस्टी बन मेरे को तेरा बनाओ, सर्व बोझों से बच्चों बिल्कुल हल्के हो जाओ
शुभ भावना का खजाना खुद में बढ़ाते जाओ, निगेटिव बात को पॉजिटिव में बदलते जाओ

- **मुरली कविता दिनांक 3.1.2019**

अल्फ और बे, बाप और वर्से की स्मृति बढ़ाओ, यही अभ्यास करके तुम खुशी का पारा चढ़ाओ
अशरीरी बनने का अभ्यास रोजाना करते जाओ, सदा अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करते जाओ
सुख शांति की चोटी पर जाने की स्मृति जगाओ, यही विधियां अपनाकर तुम खुशी बढ़ाते जाओ
स्थान बहुत ऊंचा है जहां के हम सब रहने वाले, पार्ट बजाने आते यहां मुक्ति धाम के रहने वाले
करो ज्ञान धारण बुद्धि को गोल्डन एज बनाकर, बाप के सिवा हर बात से रखो ममत्व मिटाकर
कर्मातीत अवस्था बनाकर अपने घर तुम जाना, कभी भी दुख न देना तुम मीठा खुद को बनाना
प्यार के सागर बनकर पत्थर को पानी बनाओ, प्यार देकर हर आत्मा का नेचर बदलते जाओ
अपनी सर्व विशेषताएं ईश्वरीय सेवा में लगाओ, इसी विधि से सदा उड़ती कला में उड़ते जाओ
ॐ शांति

- **मुरली कविता दिनांक 4.1.2019**

बाप की याद में रहकर तुम हर्षित बनते जाओगे, रमणीक मीठे बनकर खुशी से सेवा कर पाओगे

कितना देही अभिमानी बने इसकी जांच करना, गृहस्थ व्यवहार में रह अनासक्ति जागृत करना

खुद से पूछो कितना करते हो बाबा से तुम प्यार, या माया चुहिया तुम्हें काटती रहती है बारम्बार

अपना बैग बैगेज ट्रांसफर करके खुशी मनाओ, मम्मा बाबा समान तख्तनशीन तुम बनते जाओ

किसी के डर से कभी भी पढ़ाई को ना छोड़ना, क्रोध में आकर ईश्वरीय मर्यादा कभी ना तोड़ना

प्रसन्नता और सन्तुष्टता ब्राह्मण जन्म की दौलत, ये खजाना मिलता है वरदाता बाप की बदौलत

इस खजाने की प्राप्ति का अनुभव कराते जाओ, अनुभवी मूरत बनकर विशेष आत्मा कहलाओ

अंत समय के बारे में सोचकर समय ना गंवाओ, अपनी अंत समय की कर्मातीत अवस्था बनाओ

- **मुरली कविता दिनांक 5.1.2019**

खुद को आत्मा समझकर देखो सबको आत्मा, भूतों को भगाने की विधि सिखाता है परमात्मा

सबको आत्मा भाई देखने की दृष्टि पक्की करो, जब किसी में भूत देखो तो उससे किनारा करो

ईश्वरीय नियमों के पालक ही आस्तिक कहलाते, भूतों के वश हो लड़ने वाले नास्तिक बन जाते

स्थाई खुशी के लिए देना है पढ़ाई पर पूरा ध्यान, आसुरी गुणों का मिटाना जीवन से नाम निशान

संकल्प का महत्व जान जमा का खाता बढ़ाओ, अविनाशी प्राप्ति करके खुद को समर्थ बनाओ

हर बोल और हर कर्म में अलौकिकता जगाओ, साधारणता को अलौकिकता में बदलते जाओ

- **मुरली कविता दिनांक 6.1.2019**

''संगमयुग पर प्राप्त अधिकारों से विश्व राज्य अधिकारी, स्वराज्य अधिकारी ''

श्रेष्ठ आत्माओं का दिव्य का दरबार बाप का बनकर बच्चे पाते ऐसे ही अनगिनत अधिकार, श्रेष्ठ पूजनीय आत्मा का मिलता सबसे पहला अधिकार

ज्ञान के सर्व खजानों का मिलता दूसरा बड़ा अधिकार, सर्व शक्तियों का हर बच्चा पाता तीसरा बड़ा अधिकार

सर्व कर्मेन्द्रियों को जीतने का मिलता चौथा अधिकार

ये सर्व अधिकार लेकर पाओ विश्व राज्य का अधिकार माया पर विजय पाकर जगाओ समर्थपने का संस्कार

बच्चों को सफलता त्याग तपस्या और सेवा ही दिलाती इन तीन बातों की धारणा हमें सच्चा सेवाधारी बनाती, नीति प्रमाण चलने वाले बच्चे स्वराज्य नेता कहलाते

धर्मनीति और स्वराज्य नीति यथार्थ रूप से अपनाते, राज्य सत्ता और धर्म सत्ता जब हो जाएगी एकाकार

तब ही सम्पुर्ण विश्व में होगी भारत की जय जयकार

भारत ही कहलाता बाप की अवतरण भूमि का स्थान, इसीलिए भारत भूमि का महत्व सारे विश्व में है महान

*ॐ शांति *

- **मुरली कविता दिनांक 7.1.2019**

आत्म उन्नति की विधि बाप ही आकर बतलाते, बाप ही हम बच्चों के प्रति ये जिम्मेदारी निभाते

याद की यात्रा पर रह आत्मा की जंक निकालो, बीती को ना याद करो और कोई आश ना पालो

जितना भी समय मिले बाप की याद में बिताओ, स्व उन्नति करने के लिए 8 घण्टे सेवा में लगाओ

तमोप्रधानता को जब पाते बाप तभी यहां आते, बाप ही आत्माओं को उन्नति के पथ पर ले जाते

पावन बनकर हमें सारी दुनिया को स्वर्ग बनाना, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बनता अपना घराना

जिस्मानी प्यार छोड़ो और रूहानी प्यार जगाओ, परमात्म प्यार के द्वारा आत्म उन्नति पाते जाओ

बड़े प्यार से लौकिक में ज्ञान की बात समझाना, शीतल नयन रखकर विकारों से खुद को बचाना

ईश्वरीय सेवा में कम से कम आठ घण्टे बिताना, पुरुषार्थ कर बाप जैसा खुद को गुणवान बनाना

बीती बातों को भुलकर तुम हर पल हर्षित रहना, कल्याणकारी ड्रामा के ऊपर सदा अडोल रहना

निश्चित विजय के नशे में रह मदद बाप की पाना, सहज रूप से अपने आपको मायाजीत बनाना

अनेक बार की जीत का स्मृति में लाना संस्कार, बाप की पदमगुणा मदद का पाओगे अधिकार
संकल्पों की शक्ति अपने में जमा करते जाओ, स्व प्रति वा विश्व प्रति इनका प्रयोग करते जाओ

- **मुरली कविता दिनांक 8.1.2019**

पावन बनने के लिए याद की यात्रा काम आती, योग से आत्माएं सर्विसेबल गुणवान बन जाती
जो राजयोग हम सीख रहे वो है सबसे निराला, यही योग है निराकार से सम्बन्ध जुड़ाने वाला
हर आत्मा का उद्धार करने वाला काम करना, पावन बनाने की सेवा करके नाम बाला करना
आत्मा का अभ्यास करके दृष्टि पवित्र बनाना, बाप की याद में रहकर पावन खुद को बनाना
एकाग्रता धारण कर शक्तिशाली बनते जाना, औरों को शक्तिशाली होने का अनुभव कराना
संकल्पों के द्वारा पवित्रता के प्रकम्पन फैलाना, बाप की दृष्टि में तुम सच्चे ब्रह्मचारी कहलाना

- **मुरली कविता दिनांक 9.1.2019**

श्रीमत पर चलकर बाप को याद करते जाओ, पढ़ाई पर अटेंशन देकर औरों से रिगार्ड पाओ
भाई भाई देखने की अपनी दृष्टि पक्की करना, भगवान हमें पढ़ाते हैं ये निश्चय पक्का करना
जितना खुद को देही अभिमानी तुम बनाओगे, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव उतना कर पाओगे
रोजाना बाप को याद करने की प्रेक्टिस करना, बाप की याद में रहकर जौहर अपने में भरना
व्यर्थ की सारी बातों को तुम बुद्धि से हटाओ, बुद्धि को स्वच्छ बनाकर उसमें ज्ञान समाओ
हर गुण धारण करना और पढ़ना मन लगाकर, भगवान हमें पढ़ाते मन में रखना नशा चढ़ाकर
प्राप्ति स्वरूप बनकर प्रसन्नता को अपनाओ, क्यों और क्या के सभी प्रश्नों से पार हो जाओ
सूक्ष्म इच्छाओं को अब मन में ना देना स्थान, सर्व प्राप्तियां तुम्हें कराते आकर खुद भगवान

परमात्म प्यार में तुम जब लवलीन हो जाओगे, माया के हर आकर्षण से मुक्ति तभी पाओगे

- **मुरली कविता दिनांक 10.1.2019**

बच्चों खुद को जब मीठा और पवित्र बनाओगे, अपने बाप का नाम तब ही बाला कर पाओगे
संगमयुग में बच्चों खुद को पूरा पावन बनाओ, खुशी से अपना तन छोड़कर परमधाम जाओ
सतोप्रधान बनने की तुम रखना सदा फ़िकरात, सेवाओं में बाप के संग बिताना दिन और रात
गुणवान बनने का जगाओ निश्चय और विश्वास, बाप की याद में रहकर हर बंधन करो खलास
मान-शान का कच्चा फल कभी नहीं तुम खाना, अभिमान मुक्त बनकर सदा प्रसन्नता बिखराना
परमात्म प्यार के सुखदाई झूले में झूलते जाना, आने वाले दुखों की सब लहरों से मुक्ति पाना

- **मुरली कविता दिनांक 13.1.2019**

'' प्रभु प्यार - ब्राह्मण जीवन का आधार ''

योगी आत्माओं की ये सभा बहुत ही निराली, बापदादा के मन को भी कितना हर्षाने वाली
जीवन जिसका योगी हो वो प्रभु प्रिय हो जाए, प्रभु प्रिय आत्मा सारे जग की प्रिय कहलाए
बच्चों अपने आपको परमात्म प्यारा बनाओ, परमात्म प्यारे बनकर जगत प्रिय बन जाओ
परमात्म प्यार से बढ़कर कुछ भी नहीं महान, ऐसा प्यार पाने वाले को मिलता सारा जहान
बच्चों प्रभु प्यार में तुम हर दिन पलते जाओ, अपने ब्राह्मण जीवन में हर पल बढ़ते जाओ
प्यार के सागर में जितना खुद को समाओगे, उतना ही प्रभु प्यार का अनुभव कर पाओगे
प्रभु प्यार में खोकर सर्व समस्याएं मिटाओ, विघ्न विनाशक बनकर मायाजीत कहलाओ

परमात्म प्यार पर अपना अधिकार जताओ, इसी विधि से खुद को समर्थ आत्मा बनाओ

- **मुरली कविता दिनांक 14.1.2019**

सम्पूर्ण पावन बनने के लिये कभी दुख ना देना, अपनी कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं कर लेना
पत्थर से पारस बनना नारायणी नशा चढ़ाकर, देह अभिमान का रोग रखना जड़ से मिटाकर
पारस बनने वाले बन सकते बाप के मददगार, सेवा से बुद्धि बन जाती स्वर्ण समान चमकदार
इन सभी प्राप्तियों का केवल पढ़ाई ही आधार, बच्चों पढ़ाई पर रखना तुम अटेंशन बारम्बार
मन्सा, वाचा, कर्मणा पवित्र खुद को बनाओ, अपनी कर्मेन्द्रियों को विकर्म करने से बचाओ
बाप की याद में रह आत्मा को कंचन बनाओ, अशरीरी बनकर घर जाने का अभ्यास बढ़ाओ
अपने ऊपर याद का नारायणी नशा चढ़ाओ, देह अभिमान की बीमारी से खुद को छुड़ाओ
अपने अन्दर महसूसता की शक्ति को जगाओ, स्वयं के पापों को जानकर उनसे मुक्ति पाओ
जीवन में रहते हुए सर्व बन्धनों से मुक्ति पाओ, इसी विधि से अपनी जीवनमुक्त स्थिति बनाओ
*ॐ शांति *

- **मुरली कविता दिनांक 15.1.2019**

स्वीट पहाड़ बाबा को अपनी स्मृति में बसाओ, बाप और वर्से को याद करके स्वीट बन जाओ
देह सहित अपना कखपन बाबा को सौंप देना, भविष्य में जाकर बाप से अपना सबकुछ लेना
बाप की बैंक में हमेशा रहेगा सबकुछ सुरक्षित, इसीलिए अपना सबकुछ करो बाप पर अर्पित
बाप के बनकर तुम सम्पूर्ण सुरक्षित हो जाओ, ऊंच पद पाने के लिए अपना पुरुषार्थ बढ़ाओ
स्वीटेस्ट बाप से बच्चों जितना पढ़ते जाओगे, उतना ही खुद को भी तुम स्वीट बनाते जाओगे

अदृश्य है स्वीट बाप जो नजर कभी ना आता, किंतू सारी कड़वी दुनिया को वो स्वीट बनाता
बाप की याद से सब कलह क्लेश मिट जाएगा, स्वीट आत्मा बनने से स्वीट तन मिल जाएगा
अपने मुख से करना सदा ज्ञान रत्नों का उद्गार, अन्तर्मन से मिटानाा तुम क्रोध का हर संस्कार
साक्षी होकर अपनी चलन का निरीक्षण करना, खुद की जांच करके हर खामी को दूर करना
देही अभिमानी बनकर देह अभिमान मिटाना, अपने अन्दर योग की ताकत को बढ़ाते जाना
शांति में रहना और अन्तर्मुखता को अपनाना, गृहस्थ में रहते हुए हर तरफ शांति ही फैलाना
बच्चों तुम्हारे दिल मे बाबा इस तरह बस जाए, बाप के सिवाय और कोई नजर तुम्हें ना आए
कोई अवगुण रखकर अपनी वैल्यू नहीं घटाना, हर कमी निकालकर प्योर डायमण्ड बन जाना
बाप से इतना प्यार हो जो उसकी याद सताए, बाप के सिवाय और कोई याद कभी ना आए
बाह्यमुखी बन खुद को धक्का नहीं खिलाओ, साक्षी होकर तुम अपनी चलन सुधारते जाओ
अपने भिन्न भिन्न रूपो का अनुभव करते जाना, नूरे रत्न श्रेष्ठ चमकती हुई मणी खुद को बनाना
फरिश्ता और ब्रह्मा की भुजा का अनुभव पाना, इन अनुभवों में खोकर शक्तिशाली बनते जाना
सेवा करके औरों के दिल की दुआएं लेते जाना, इसी विधि के द्वारा पुरुषार्थ को सहज बनाना
*ॐ शांति *

- **मुरली कविता दिनांक 16.1.2019**

आत्म अभिमानी बनने की प्रेक्टिस को बढ़ाओ, विकारी ख्यालों को अपने मन बुद्धि से उड़ाओ
मीठे बाप को बच्चों जितना याद करते जाओगे, उतना ही तुम सतोप्रधान पावन बनते जाओगे
शांति के लिए दुनिया वाले सिर्फ कॉन्फ्रेंस करते, केवल बाप ही सारे विश्व में शांति स्थापन करते
विश्व शांति कैसे होगी सबको जाकर समझाओ, बाप ही शांति स्थापन करते सबको ये बतलाओ
आत्मा आत्मा भाई भाई की दृष्टि पक्की करना, इसी विधि से क्रिमिनल ख्यालात समाप्त करना

देह अभिमान ही करता इन्द्रियों को चलायमान, आत्म अभिमान से बनते मास्टर सर्वशक्तिमान

चाहे नर हो या नारी जो भी सम्मुख तुम्हारे आए, हर देहधारी में तुम्हें सिर्फ आत्मा ही नजर आए

यही प्रेक्टिस ही बच्चों को सतोप्रधान बनाएगी, क्रिमिनल आई की बीमारी भी जड़ से मिटाएगी

बाप से ताक़त लेकर बनते जाना है सतोप्रधान, पुरुषार्थ करके अपने अन्दर जगाना आत्मभान

सबके मन में सेवा के प्रति शुभ भावना जगाओ, सबकी सन्तुष्टता के बल से सर्व सफलता पाओ

सहयोग और सद्भावना सहज सफलता दिलाती, यही शुभकामनाएं सेवा में आशीर्वाद बन जाती

बाप समान सेवा में जब तुम हाजिर हो जाओगे, जी हुजूरी करके तुम पुण्य जमा करते जाओगे

*ॐ शांति *

Visit our main website: www.brahma-kumaris.com OR bkofficial.com

Our personal divine search engine: BK Google – www.bkgoogle.com